Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886|
Vol. 16 Issue 10, Oct- 2021
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

गीता के कर्त्तव्य बोध की उपयोगिता : कल आज और कल

प्रो.(डॉ) सत्यवती, आचार्य संस्कृत
प्राचार्य, राजकीय कृषि महाविद्यालय, तारानगर, चूरू
Email ID- dr.satyawati@gmail.com

शोध पत्र सारांश

श्रीमद् भगवद्गीता को आज किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है। विश्व स्तर पर प्रसिद्धि प्राप्त इस अमर कृति की गणना प्रमाणिक ग्रन्थों में की जाती है। वर्तमान में अधिकाधिक भाषाओं में रूपांतरित कोई ग्रंथ है, तो वह गीता ही है। गीता में मुख्य रूप से श्री कृष्ण जी द्वारा विषाद एवं मोहग्रस्त अर्जुन की मन: स्थिति को समझ कर उसे परिवर्तित कर, कर्म करने के लिए प्रेरित किया गया है । आज मनुष्य बिना कर्म किए ही सब कुछ प्राप्त करने की चाहत रखता है। कर्म करके विश्व मंगल व राष्ट्र उत्थान की भावना विलुप्त प्रायः दिखाई देती है । सर्वत्र स्वार्थ व आपाधापी का साम्राज्य दिखाई दे रहा है। महाभारत के युद्ध में तो विषाद केवल अर्जुन को ही था परंतु आज सारा प्राणी जगत् ही विषाद युक्त प्रतीत हो रहा है। अर्जुन रूपी जनता भय, भूख, भ्रष्टाचार, दुराचार, उग्रवाद, आतंकवाद, बेईमानी जैसी अनेक बुराइयों की चक्की में पीस रही है। कौरव अन्याय के प्रतीक एवं पांडव न्याय के पक्षधर में भी न्याय और अन्याय के लिए ही युद्ध हुआ था। अभी भी जनता कदम कदम पर अन्याय की शिकार दिखाई देती है। चारों ओर से पीड़ित मानव की हाहाकार व चीत्कार सुनाई दे रही है। लाचार जनता की पुकार कोई नहीं सुनना चाहता। जिनका उत्तरदायित्व समाज को भय, भूख, आतंकवाद, भ्रष्टाचार से मुक्त करने का है वे भी प्रायः धृतराष्ट्र की भूमिका में प्रतीत हो रहे हैं।

मुख्य शब्द:- (क) स्वकर्त्तव्य का पालन सूर्य के प्रकाश जैसा है। (ख) कर्त्तव्य विहीन होना अज्ञानान्धकार में गिरने जैसा है । (ग) ज्ञान के सदृश दूसरी कोई पवित्र वस्तु नहीं है। (घ) श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करते हैं, साधारण मनुष्य भी वैसा-वैसा आचरण करते हैं ।

प्रस्तावना

सभी समस्याओं का मूल वेद विरुद्ध आचरण है। महाभारत के युद्ध का मुख्य कारण जुआ खेलना है जबकि वेद में जुआ खेलने के लिए निषेध किया गया है "अक्षैर्मा दिव्य:"1 युधिष्ठिर के जुआ खेलने के दुष्परिणाम स्वरूप ही युद्ध जैसा महा अनर्थ हुआ। कुरुक्षेत्र के मैदान में न्याय और अन्याय की सेना युद्ध के लिए एकत्रित हुई परंतु विडंबना यह है कि न्याय के योद्धा रणभूमि नायक अर्जुन मोह के दलदल में फंसकर गीता के 1/34 "2 श्लोक की दुहाई देकर अपने कर्त्तव्य से विमुख हो गया। उस विषम परिस्थिति में संकट मोचक ,सच्चे मार्गदर्शक व हित चिंतक श्री कृष्ण जी ने सिंह गर्जना कर अर्जुन को स्वकर्त्तव्य के लिए ललकारा कि "इस कठिन परिस्थिति में तुझे स्वकर्त्तव्य विमुख होने का अज्ञान कहां से प्राप्त हुआ है? यह स्वकर्त्तव्य से दूर करने वाला अज्ञान श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा ग्रहण करने योग्य नहीं है।" 3

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886|
Vol. 16 Issue 10, Oct- 2021
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कर्त्तव्य विहीन होना अज्ञान अंधकार में गिरने जैसा है तथा स्वकर्त्तव्य का पालन सूर्य के प्रकाश जैसा है। यह जीवन ही धर्म क्षेत्र है यही कर्म क्षेत्र है। इस शरीर रूपी युद्ध के मैदान में असुर तथा दैव भाव प्रतिक्षण आमने-सामने खड़े होते हैं । वर्तमान में भारतवर्ष विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है भय, भूख, भ्रष्टाचार, आतंकवाद ,बेईमानी व कर्त्तव्य हीनता आदि शत्रु सुरसा की भांति मुंह फैलाए खड़े हैं। भोली भाली जनता को ये दो मुंह नाग फन फैलाकर जकड़ रहे हैं। सामान्य जनता अज्ञानग्रस्त व अकर्मण्य दिखाई दे रही है। गीता के चतुर्थ अध्याय में वर्णित किया है कि " ज्ञान के सदृश दूसरी कोई पवित्र वस्तु नहीं "4 महाभारत में श्री कृष्ण ने अर्जुन की बुद्धि पर पड़े हुए रूपी मोह रूपी अज्ञान को दूर करने के लिए अथक प्रयास किया और स्वकर्त्तव्य का बोध करवा कर न्याय युक्त कार्य में नियुक्त कर समाज को संदेश दिया कि अन्याय को किसी भी कीमत पर सहन नहीं किया जाएगा। ठीक इसी प्रकार पीड़ित ,शोषित कर्त्तव्य विहीन मनुष्यों की बुद्धि पर पड़े हुए अज्ञान के पर्दे को कर्त्तव्य रूपी ज्ञान के प्रकाश के द्वारा दूर कर स्वकर्त्तव्य बोध के लिए समाज में जागृति पैदा करने की आवश्यकता है। जब तक सामान्य जनता अन्याय ,भ्रष्टाचार आदि बुराइयों से लड़ने के लिए कृत संकल्प नहीं होगी तब तक न्याय की तथा अधिकारों की पूर्ति की कल्पना करना भी बेमानी होगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि ज्ञान के प्रचार प्रसार बिना जागरूकता पैदा नहीं की जा सकती ! दूसरी ओर श्री कृष्ण जी कहते हैं कि बिना श्रद्धा के अर्थात दृढ़ इच्छा शक्ति के अभाव में ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता! "श्रद्धावान् व्यक्ति ही ज्ञान प्राप्त कर सकता है "5 कुरुक्षेत्र के मैदान में तो केवल अर्जुन को ही मोहवश चित्त विभ्रम हुआ था परंतु अब तो संपूर्ण प्रजा ही मोहवश विवेक रहित होकर स्वकर्त्तव्य से विमुख होती हुई दिखाई दे रही है । जब अर्जुन मोह ग्रस्त होकर स्वकर्त्तव्य से पीछे हटने लगा तब श्री कृष्ण जी ने ललकारते हुए सावधान किया कि हे "कौन्तेय ! यह मोह रुपी अज्ञान तुझ जैसे योद्धा के लिए शोभा नहीं देता! योद्धा का धर्म (कर्त्तव्य) है कि युद्ध करना ; अपने युद्ध रुपी कर्त्तव्य को देखकर इस प्रकार कांपना व भयभीत होना उचित नहीं है क्योंकि एक क्षत्रिय के लिए धर्मयुक्त युद्ध से बढ़कर अन्य कोई भी कार्य कल्याणजनक नहीं है "6। इतना ही नहीं ! पुनः कर्म करने पर बल देते हुए श्री कृष्ण जी कहते हैं कि "यदि तुम धर्म युक्त संग्राम रूपी कर्त्तव्य को नहीं करोगे तो यश को नष्ट कर पाप को प्राप्त करोगे "7 जो कि तुझ जैसे योद्धा के लिए उचित नहीं है ?हमेशा समाज अपने से अग्रणी का अनुकरण करता है; आगे श्लोक में कहा गया है कि "श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करते हैं, साधारण मनुष्य भी वैसा-वैसा आचरण करते हैं। श्रेष्ठ पुरुष जिस वस्तु को प्रमाण मानकर चलते हैं, संसार उसी आदर्श का अनुकरण करता है ।"8 श्रीकृष्ण जी ने अर्जुन को कर्त्तव्य बोध करवाने के लिए अनेक यत्न किए ; ठीक इसी प्रकार वर्तमान में अज्ञान रूपी मोह व विषाद युक्त जनता के लिए सच्चे सुधारक, शुभचिंतक, कष्ट निवारक कई कृष्णों की आवश्यकता है ।श्री कृष्ण जी एक प्रकार से व्यवस्था को ठीक करने और करवाने के पक्षधर थे,जिसकी उपादेयता आज भी उतनी ही है जितनी तत्काल थी। वर्तमान की समस्याओं को दूर करने व मन को एकाग्र कर शांति प्राप्त करने में गीता ज्ञान की अहम भूमिका है। सृष्टि के प्रारंभ से लेकर वर्तमान तक ज्ञान व कर्म के महत्व को सभी ने एक मत से स्वीकार किया है। ज्ञान के बिना कर्म अंधा

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886|
Vol. 16 Issue 10, Oct- 2021
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

है तथा कर्म के बिना ज्ञान लंगड़ा है। इतना ही नहीं ! नीति वचन है कि "ज्ञानं भार: क्रियां विना" जीवन रूपी गाड़ी को सही मार्ग पर ले जाने हेतु मनुष्य के लिए ज्ञान व कर्म दो पहिए हैं दोनों के ठीक संतुलन से ही मानव जीवन का उत्थान व राष्ट्र के अभिवृद्धि हो सकती है। कर्म का महत्व न केवल मानव मात्र के लिए अपितु प्राणी मात्र के लिए आवश्यक है ,केवल मात्र अंतर यही है कि मनुष्य अपने विवेक से शुभ अशुभ कर्मों का निर्णय कर सकता है जबकि मानवेतर प्राणी केवल अपनी क्षुधा, निद्रा को शांत कर सकते हैं। नैसर्गिक रूप से कर्म के बंधन में सभी प्राणी बंधे हुए हैं ; जैसा की गीता के श्लोक में वर्णित किया गया है "बिना कर्म किए कोई भी प्राणी क्षण भर भी नहीं रह सकता है, प्रकृति जन्य गुणों द्वारा (भूख प्यास आदि गुण अपने वश में करके मनुष्य से)अपना-अपना काम करवाते हैं ।"9 " जीवन यात्रा का आधार कर्म ही है अर्थात बिना कर्म किए सृष्टि चक्र नहीं चल सकता। "10 गीता का यह सर्वमान्य सिद्धांत है कि "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन "11 अर्थात् प्राणी को कर्म का त्याग नहीं करना चाहिए प्रत्युत् कर्म के फल की इच्छा का त्याग करना चाहिए । गीता के तृतीय अध्याय में श्री कृष्ण जी ने जनक आदि राजाओं के उदाहरण देकर यह सिद्ध किया कि " निश्चित रूप से परमसिद्धि (सफलता)की प्राप्ति कर्म द्वारा हो सकती है।"12 अर्थात् राष्ट्र की उन्नति राष्ट्र की अभिवृद्धि शुभ कर्मों के आधार पर ही आधारित है। आज जिन युवाओं के कंधों पर राष्ट्र का वर्तमान व भविष्य संवारने का दायित्व है वह आज असहिष्णु, अकर्मण्य, किंकर्तव्यविमूढ़, पथभ्रष्ट और अवसाद ग्रस्त, अनैतिक कृत्यों में फंसकर अनुचित तरीके अपनाकर राष्ट्र की प्रगति में विकास की जगह विनाश के पर्याय बन रहे हैं । गीता के कर्मयोग का उपदेश ऐसे व्यक्तियों के हृदय से निराशा, कायरता को अकर्मण्यता को दूर कर कर्तव्य बोध का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। ऐसे व्यक्तियों के लिए गीता का उपदेश असीम शांति प्रदान कर सकता है । राष्ट्र की अभिवृद्धि केवल और केवल ज्ञान व कर्म की समन्वित उपासना से ही संभव है। उपनिषद के इस कथन को " उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत: "13 इसे जीवन का लक्ष्य बनाकर राष्ट्र की अभिवृद्धि में योगदान किया जा सकता है। गीता का कर्मयोग देश, काल की सीमाओं से परे मानव मात्र को कर्त्तव्य बोध कराने वाला प्रेरणादायी कल्याणकारी अमृत है जिसके पान से प्राणी मात्र का हित हो सकता है । अंत में निष्कर्ष रूप में यही कह सकते हैं कि गीता के कर्म योग का उपदेश आज के युवाओं के हृदय से कायरता, असहिष्णुता, अकर्मण्यता आदि को दूर कर उचित अनुचित का कर्त्तव्य बोध करवाते हुए नव प्रेरणा से स्फूरित कर जीवन में आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। तभी हम वेद वाणी द्वारा उद् घोष कर सकते हैं कि "पुरूषार्थ मेरे दाहिने हाथ में और विजय मेरे बायें हाथ में"14 वेदों की समर्थक गीता का भी यही सार है। गीता का ज्ञानामृत मानव मात्र को कर्त्तव्य बोध कराने वाला, प्रेरणास्पद तथा कर्त्तव्य पथ पर निरंतर अग्रसर करता हुआ दु:खों से त्राण दिलवाने में बीते हुए (कल)में भी उपयोगी था, (आज)भी उतना ही उपयोगी है, तथा आने वाले(कल) भविष्य में भी इतना ही उपादेय सिद्ध होगा।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886|
Vol. 16 Issue 10, Oct- 2021
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संदर्भ सूची

1 ऋग्वेद 10/34/13

2 आचार्या: पितर: पुत्रास्तथैव च पितामहा:--- संबन्धिनस्तथा । गीता 1/34

3 कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्। गीता 2/2

4 न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। गीता 4/38

5 श्रद्धावांल्लभते ज्ञानं तत्पर: संयतेन्द्रिय: । गीता 4/39

6 स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमहर्सि।
---------क्षत्रियस्य न विद्यते।। गीता 2/31

7 अथ ---------तत: स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि। गीता 2/33

8 यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन:।
स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनqवर्तते। गीता 3/21

9 न हि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवश: कर्म सर्व: प्रकृतिजैर्गुणै:।। गीता अध्याय 3/5

10 नियतं कुरु कर्म ---------शरीरयात्रापि च
ये न प्रसिद्धयेदकर्मण:। गीता अध्याय 3/8

11 कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
गीता अध्याय 2/ 47

12 कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादय:।
गीता अध्याय 3/ 20

13 उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत: कठोपनिषद 3/14

14 कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहित: ।
अथर्ववेद 7/50/8

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 श्रीमद् भगवद्गीता (स्वामि समर्पणानन्द सरस्वती)
प्रकाशक :- आर्य समाज मेरठ नगर (राधेलाल सराफ एंड संस चैरिटेबल ट्रस्ट साधना शिवानी रोड मेरठ)

2 श्रीमद् भागवत गीता व्याख्याकार डॉक्टर विश्वनाथ शर्मा
प्रकाशक :- आदर्श प्रकाशन चोडा रास्ता, जयपुर

3 एकादशोपनिषद् (कठोपनिषद) महात्मा नारायण स्वामी , सम्पादक नरेंद्र कुमार आचार्य
प्रकाशक:- आर्य प्रकाशन 814 कुण्डेवालान अजमेरी गेट दिल्ली 110006

4 अथर्ववेद भाष्य:- भाष्यकार क्षेमकरण दास
प्रकाशक:- आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली